ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, January-June 2025, Submitted in February 2025

धार जिले में जनजातीय क्षेत्र के कृषकों की कृषि विपणन व्यवस्था का अध्ययन

विक्रम मुझाल्दा, शोधार्थी, माधव विश्वविद्याल पिण्डवाड़ा (सिरोही) राजस्थान
प्रो. (डॉ) मुकेश कुमार महावर, शोध निर्देशक, माधव विश्वविद्याल पिण्डवाड़ा (सिरोही) राजस्थान

सारांश

प्रस्तुत लघु शोध अध्ययन ''धार जिले में जनजातीय क्षेत्र के कृषकों की कृषि विपणन व्यवस्था का अध्ययन'' पर लघु शोध अध्ययन को पूर्ण किया जाएगा। इस लघु शोध अध्ययन के अंतर्गत वर्तमान समय में धार जिले में निवास करने वाली जनजातीय क्षेत्र के कृषकों की कृषि विपणन व्यवस्था का अध्ययन किया जा रहा है।

आधुनिक समय में किसी भी वस्तु का उत्पादन केवल उपभोग के लिए ही नही वरन विक्रय के लिए भी किया जाता है। बड़े पैमाने पर वस्तुओं का उत्पादन किए जाने से विपणन का क्षेत्र इस समय व्यापक हो गया है। वर्तमान उदारीकरण एवं वैश्वीकरण के युग में भी आर्थिक व्यवस्था का एक पहलु उत्पादन है तो दूसरा उसका विपणन है। राष्ट्रिय अर्थव्यवस्था में कृषि उपज विपणन का भी उतना ही महत्व है जितना कृषि उपज के उत्पादन का, क्योंकि भारतीय कृषि का स्वरूप आर्थि विकास के साथ–साथ बदलता जा रहा है। अतः वर्तमान में समस्या वस्तुओं के उत्पादन की न रहकर उसके विपणन की है। धार जिलें में कृषि विपणन सर्वाधिक महत्वपुर्ण है। क्योंकि इस क्षेत्र में श्रम शक्ति का 64 प्रतिशत भाग कृषि क्षेत्र से आजीविका प्राप्त करता है। तथा सकल घरेलु उत्पदन में कृषि का क्षेत्र का हिसा 20 प्रतिशत के लगेभाग है। आज बाजार तथा बाजार संबंधी क्रिया दोनों ही आर्थिक ढॉचे की महत्वपूर्ण क्रिया बन गई है। वर्तमान समय में कृषि का व्यावसायीकरण हो जाने से इसके विपणन की समस्या उत्पन्न हो गई है। यह कहना अनावश्यके नही होगा कि कृषि विपणन का विकास कृषि के आधुनिकीकरण के लिए महत्वपूर्ण है। सुविकसित ग्रामीण बाजार से ग्रामीण अर्थव्यवस्था का विकास संभव है। धार जिला जनजातीय समुदाय से बाहुल्य होने के साथ–साथ कृषि क्षेत्र में भी आगे है।

शब्द कुजीः– धार जिले में जनजातीय क्षेत्र के कृषि विपणन

1.प्रस्तावना :–

धार जिले में निवास करने वाले जनजातीय समुदाय के द्वारा कृषि क्षेत्र के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान है। वास्तव में ''कृषि धार जिले में केवल जीविकोपार्जन का साधन या उद्योग धंधा ही नही है, अपितु अर्थव्यवस्था की रीड़ की हड्डी है।" धार जिले के अधिकतर उद्योग–धंधे, व्यापार मुद्रा अर्जन, विभिन्न योजनाओं की सफलता एवं राजनैतिक स्थायित्व भी कृषि पर ही निर्भर है।

कृषि की गहनता, विधायन क्रिया तथा संग्रहण के विकास के साथ ही कृषि उत्पादन का विपणन अधिकाधिक महत्वपूर्ण हो गया है। कृषि क्षेत्र के विकास के लिए कृषि विपणन का विकास होना भी आवश्यक है। उचित विपणन तथा वितरण व्यवस्था, वस्तुओं तथा सेवाओं की उपलब्धता बढ़ाने में सहायक हो सकती है। जिससे अधिक उत्पादन की प्रेरणा भी प्राप्त होगी तथा मांग एवं पूर्ति दोनों में वृद्धि कों भी प्रोत्साहन मिलेगा।

इस प्रकार विकासोन्मुख कृषि विपणन की भूमिका महत्वपूर्ण है। प्रस्तुत शोध लघु अध्ययन की दृष्टि से देखें तो वैश्विक अर्थव्यवस्था में कृषि उपज का बाजार प्रमुख स्थान ले रहा है। जिला स्तर से लेकर प्रदेश स्तर तक व्यापार में निवेश करने वाली संस्थाएँ इस दिशा में अधिक रूचि ले रही है। कृषि में परम्परागत उपजों का स्थान गौण होता जा रहा है। रोजगार सृजन, विदेशी मुद्रा अर्जन, मानव एवं प्राकृतिक संसाधनों के उपयुक्त विदोहन, प्राचीन भारतीय संस्कृति के पुनरूस्थान, मानव स्वास्थ्य के कल्याणार्थ तथा देश की अर्थव्यवस्था के सुदृढ़ीकरण हेतु कृषक क्षेत्र को वर्तमान में सर्वाधिक सम्भावना सम्पन्न क्षेत्र में देखा जा रहा है।

कृषि सम्पूर्ण भारत में प्राथमिक क्षेत्र के अर्तगत आता है। ठीक उसी प्रकार धार जिले में भी कृषि ही सबसे महत्वपुर्ण जीविका का साधन है। यहां की लगभग 80 प्रतिशत जनसंख्या मुख्य रूप से कृषि पर ही आधारित है। इसका प्रमुख कारण यह है। कि जिले की सम्पुर्ण जनसंख्या का 78 प्रतिशत भाग गांवों में निवास करता है। जिनका सीधा अथवा प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से संबंध कृषि से ही होता है। इसी कारण यहां की कृषि जिले के विकास का प्रमुख स्त्रोत भी माना जाता है। धार जिले में उपलब्ध भूमि अधिकांश पहाड़ी है। जिसके कारण कृषि हेतु समतल भूमि का अभाव हैं। यहां की धरातलीय विषमता, मानसूनी जलवायु पर निर्भरता अविकसित तकनीक एवं आधुनिक कृषि यंत्रों व उपकरणों के अभाव में जिले के

इस क्षेत्र में वांछित सफलता नही मिल पाई जिले में कृषि उपयोगी भूमि अपेक्षाकृत कम है जों फसलों के उत्पादन को प्रभावित करती है। पर्वतीय तथा पठारी भागों में तीव्र होने से कृषि कार्य भी कठिन हो जाता हैं। जिले में औसत वर्षा की कमी कृषि पर नकारात्मक प्रभाव डालती है।

धार जिले की भूमि व्यवस्था के अध्ययन के पूर्व ऐतिहासिक अध्ययन सर्वप्रथम आवश्यक है। उन्नत कृषि उत्पादन के लिए एक भू–धारण प्रणाली का होना आवश्यक है। हम यह कह सकते है कि कृषि उत्पादन में स्थायी विकास के लिए यह पहली शर्त है कि भु–धारण के अतंर्गत हम देखते है कि कृषक के स्वामित्व में भूमि किन शर्तो में रहती है। तथा स्वामित्व का महत्व क्या हो सकता है।

इस प्रकार कृषि उपज का विपणन धार जिले की कृषि अर्थव्यस्था का प्रभावकारी तत्व है। प्रस्तुत शोध अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य म.प्र. में कृषि उपज की विपणन व्यवस्था का अध्ययन ही है। इस दृष्टि से धार जिलें की दों प्रमुख फसलों गेंहुं एवं सोयाबीन को शोध अध्ययन का आधार बनाया गया है। इन फसलों का बाजार राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय है। अतः जिले में चयनित कृषि उपज के क्षेत्र, उत्पादन एंव विपणन व्यवस्था, कीमतों में उच्चावचन, जिले की विभिन्न मण्डियों में कीमतों के बीच पारस्परिक संबंध, विपणन की बदलती प्रक्रिया , विपणन की समस्याओं एवं कठिनाइयॅा तथा निर्यात सम्भावनाओं आदि पर यह शोध अध्ययन आधारित है।

2. शोध के उद्देश्य :–

प्रस्तुत लघु शोध पत्र का उद्देश्य निम्न प्रकार है। (i) भूमि व्यवस्था के अंतर्गत भूमि सीमा कानून का क्रियान्वयन भू–समतलीकरण तथा भूमि रखरखाव में हुए परिवर्तन परिवर्द्धन की प्रक्रिया का आंकलन करना। सिंचाई की उपलब्ध सुविधाएं तथा इस परिपेक्ष्य में निर्धारित अवधि के बाद कृषि सिंचाई सुविधाओं में हुए संरचनात्मक परिवर्तन का आंकलन करना। (ii) धार जिलें के विभिन्न ग्रामीण स्थिति का मूल्यांकन करना। (iii) कृषि उद्योगों एवं व्यवसायिक क्षेत्रों में वनों के योगदान का मूल्यांकन करना। (iv) कृषि एवं कृषि पर आधारित उद्योंगों के विकास की संभावनाओं को अनुमानित करना। (v) कृषि व्यवस्था तथा औद्योगिक विकास के क्षेत्रीय एवं जिला स्तरीय प्रकृति का मूल्यांकन करना। (vi) कृषि की प्रकृति एवं विशिष्टाओं का सूक्ष्मतम उपयोग परीक्षण करते हुए कृषि विकास हेतु उचित नीति निर्धारण का औचित्य प्रतिपादित करना इत्यादि इस लघु शोध अध्ययन कार्य प्रमुख उद्देश्य है।]

3. अध्ययन का स्तरः–

शोध पत्र के अध्ययन के लिए धार जिलें में निवास करने वाले जनजातीय क्षेत्र में कृषि विपणन का अध्ययन इस लघु शोध पत्र के लिए शामिल किया गया है।

4. आंकड़ों का संकलन और विधिः–

धार जिलें में निवास करने वाले ऐसे कृषक जो की जनजातीय क्षेत्र में निवास करते हो और कृषि क्षेत्रों से संबंधित अध्ययन को आधार मानकर अध्ययन के लिए आंकड़ों को दो माध्यम से आंकलित किया गया है। व्यक्तिगत सर्वेक्षण के माध्यम से अवलोकन किया गया है। द्वितीयक स्त्रोंत के अंतर्गत प्रकाशित स्त्रोत का अध्ययन किया गया है तथा भारत सरकार एवं मध्यप्रदेश सरकार द्वारा प्रकाशित पत्र–पत्रिकाओं एवं इंटरनेट आदि के माध्यम से ऑकाड़ों को प्राप्त किया गया है और इनकों वर्णनात्मक विधि के आधार पर प्रस्तूत किया गया है।

मेरे द्वारा चयनित लघ शोध अध्ययन के द्वारा यह जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया जा रहा है, कि इन जिसमें मेरे द्वारा कुछ सामान्य प्रश्नों के माध्यम से धार जिले में जनजातीय क्षेत्रों के विकास में कृषि विपणन की भूमिका के माध्यम से जानकारी एकत्रित करने का प्रयास किया गया है, जो किइस लघु शोध का मूख्य उद्देश्य है।

तालिका क्रं. 01 क्या आप जनजातीय समुदाय के अंतर्गत आते हैं ?

स.क्रं.	विवरण	प्रतिशत
1	हॉ	60
2	नही	40
	कुल योग	100

स्त्रोतः– प्राथमिक आंकड़ों के आधार पर

उपरोक्त तालिका क्रं. 01 से स्पष्ट होता है कि धार जिले में निवास करने वाले अधिकतर जनजातीय उत्तरदाताओं का मानना है कि व जनजातीय समुदाय के अंतर्गत आते हैं ऐसा मानने वाले

ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, January-June 2025, Submitted in February 2025

उत्तरदाताओं का प्रतिशत 60 है। एवं बल्कि कुछ जनजातीय समुदाय का मानना हैं कि वे जनजातीय समुदाय के अंतर्गत नही आते है, ऐसा मानने वाले उत्तरदाताओं का प्रतिशत 40 है।

अतः कहा जा सकता है कि धार जिले में अधिकतर उत्तरदाता जनजातीय समुदाय के अंतर्गत आते हैं, जिसमें मुख्य रूप से भील, भीलाला, सहारिया जनजाति आते है, जिनके द्वारा प्रमुख रूप से कृषि कार्य को संपन्न किया जाता है।

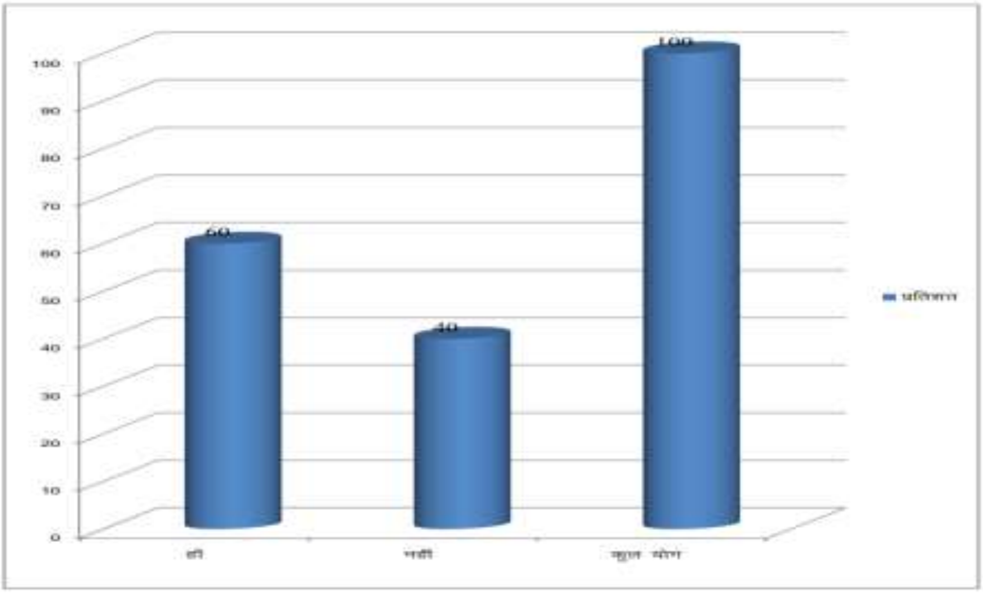

तलिका क्रं. 02 क्या आप कृषि संबंधित कार्यों को करते हैं ?

स.क्रं.	विवरण	प्रतिशत
1	हॉ	75
2	नही	25
	कुल योग	100

स्त्रोतः– प्राथमिक आंकड़ों के आधार पर

उपरोक्त तालिका क्रं. 02 से स्पष्ट होता है कि धार जिले में निवास करने वाले अधिकतर उत्तरदाताओं का मानना हैं कि वे कृषि संबंधित कार्य करते है, इस तथ्य को मानने वाले उत्तरदातोओं का प्रतिशत 75 हैं एवं वहीं कुछ उत्तरदाताओं का मानना है कि वे कृषि संबंधित कार्य नही करतें हैं इस तथ्य को मानने वाले उत्तरदाताओं का प्रतिशत 75 हैं

उक्त तथ्यों से ज्ञात होता है कि धार जिले में निवास अधिकतर जनजातीय उत्तरदाताओं का मानना है कि वे कृषि संबंधित कार्य करते है, उनके द्वारा साल में दो से तीन फसले मुख्य रूप से उगाई जाती है, कुछ ऐसे उत्तरदाता भी जिनका मानना हैं कि वे कृषि संबंधित कार्य के अलावा अन्य कार्य भी करते है।

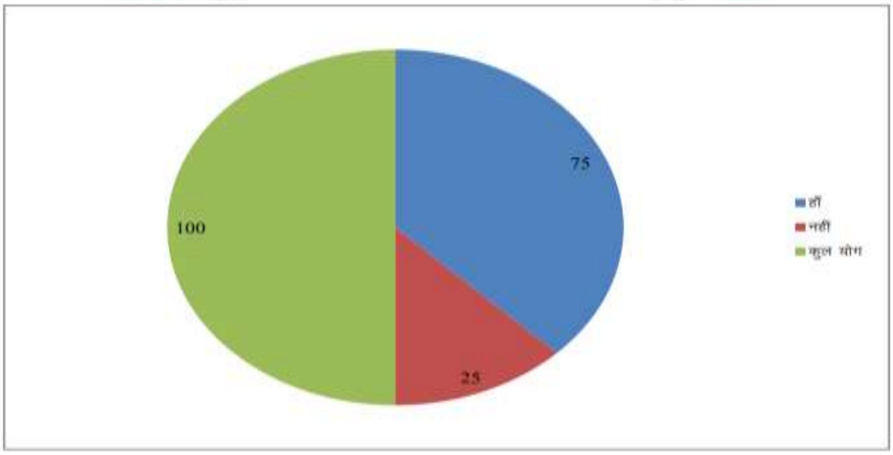

तालिका क्रं. 03 क्या आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार का करण कृषि क्षेत्र है ?

ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, January-June 2025, Submitted in February 2025

स.क्रं.	विवरण	प्रतिशत
1	हॉ	60
2	नही	40
	कुल योग	100

स्त्रोतः– प्राथमिक आंकड़ों के आधार पर

उपरोक्त तथ्यों से ज्ञात होता है कि धार जिले में निवास करने वाले अधिकतर जनजातीय उत्तरदाताओं का मानना है कि उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार का मुख्य कारण कृषि है, इस तथ्य को मानने वाले अधिकतर उत्तरदाताओं का प्रतिशत 65 है, वही कुछ ऐसे उत्तरदाता भी मिले है जिनका मानना है कि उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार का मुख्य कारण कृषि नही है, इस तथ्य का मानने वाले उत्तरदाताओं का प्रतिशत 35 है।

अतः कहा जा सकता है कि धार जिले में निवास करने वाले अधिकतर जनजातीय उत्तरदाताओं का मानना हैं कि उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार का मुख्य कारण कृषि क्षेत्र है।

उपर वर्णित विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता हैं कि धार जिले में निवास करने वाले अधिकतर उत्तदाताओं की आर्थिक स्थिति में सुधार का मुख्य कारण कृषि क्षेत्र है।

निष्कर्षः–

उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखकर मेरे द्वारा कुछ निष्कर्ष दिया जा रहें है, जिसमें मुख्य रूप से धार जिले में जनजातीय समुदाय के लोग ज्यादा निवास करते है। इन लोंगो के द्वारा रूप धार जिले में जनजातीय समुदाय के लोग ज्यादा लोग निवास करते है। इन लोगों के द्वारा कृषि संबंधित कार्य को आसानी से सम्पन्न किया जाता है। इसके अलावा कुछ जनजातीय उत्तरदाताओं का मानना है कि उनके द्वारा कृषि कार्य के अलावा अन्य बहुत सारे कार्यो को भी संपन्न किया जाता है, इसके अलावा इनके पूर्वज भी कृषि कार्य को करते आ रहें है, जिसके कारण इनका मुख्य व्यवसाय कृषि ही है। इन समुदाय के द्वारा और भी कई प्रकार के कार्य किये जाते है। इसी तरह से इन लोगों कों मानना हैं कि जनजातीय समुदाय के द्वारा इनकी फसलों को उंचे दामों पर शहर की मण्डियों में आसानी से बेचा जाता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. मिश्र, जयप्रकाश (2009), कृषि अर्थशास्त्र, साहित्य भवन पब्लिकेशंस, आगरा
2. द्विवेदी, राधेश्याम (2003), म.प्र. कृषि उपज मण्डी अधिनियम, सुविधा लॉ हाउस, भोपाल (म.प्र.)
3. भारतीय जनगणना पुस्तिका, 1991 एवं 2001, 2011
4. म.प्र. की जनजातीयॉ, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल
5. भारतीय जनगणा, 2011, म.प्र.श्रंखला – 24